>

Title: Need to bring back the relics of Gautam Buddha from Kandhar, Afghanishtan to India.

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): अध्यक्ष महोदया, आज से करीब 2500 वर्ष पहले जब भगवान बुद्ध वैशाली, जो गणतंत्र की जन्मभूमि है, में आए थे। उन्होंने वैशाली के के बारे में कहा था : वज्जिनाम् सत अपरिहानिया धम्मः अर्थात seven virtues of Vajjians leading not to decline. इसका मतलब है कि जहां सात धर्मों का पालन होगा, उस समाज की अवनति कभी नहीं होगी, हमेशा तरक्की होगी। बार-बार असेंबल होना, नियमा बनाकर हुक्म जारी करना, महिलाओं और बच्चों की पूरी सुरक्षा करना, बुजुर्गों की इज्जत करना, ये सभी सात डायरेक्टिव प्रिंसिपल्स थे। उसी सभा में अपने अंतिम वर्षावास में उन्होंने घोषणा कि आज के 90वें दिन मेरा महापरिनिर्वाण हो जाएगा। इससे सारे लोग चिन्तित हो गए। वहां से बुद्ध जी ने कासिया-कुशीनगर की तरफ प्रस्थान किया। वैशाली के लोग उनके प्रति इतनी ज्यादा श्रद्धा रखते थे कि सभी लोग उनके पीछे लग गए। केसरिया तक जाकर भी जब वैशाली के लोग नहीं लौटे, तो भगवान बुद्ध ने अपना भिक्षापात्र उन्हें समर्पित करते हुए कहा कि यही स्मरण के लिए रखो, मेरा तो 90 दिन के बाद महापरिनिर्वाण हो जाएगा। वह भिक्षापात्र वैशाली में रखा हुआ था। जब कुषाणों का आक्रमण हुआ, तो वे उसे वहां से पेशावर ले गए। पेशावर से वह भिक्षापात्र अफगानिस्तान के काबुल में ले जाया गया। अभी श्री श्रीधर वासुदेव सोहनी, जो बिहार के चीफ सेक्रेटरी और लोकायुक्त थे, एक पुराने आईएएस और काबिल आदमी हैं, उन्होंने एक लेख लिखा है, उस भिक्षापात्र की फोटो छपी है कि आजकल वह कन्धार में रखा हुआ है। इसलिए 2500 वर्ष पहले भगवान बुद्ध ने जो भिक्षापात्र वैशाली की महान जनता को, लिच्छवी और वज्जिसंघ के लोगों को दिया था, वह भिक्षापात्र अभी कन्धार में मौजूद है। इसलिए भारत सरकार के विदेश विभाग और प्रधानमंत्री जी, सभी से मैं आग्रह करता हूं कि इस समय भारत और अफगानिस्तान के बीच अच्छे रिश्ते हैं, दुनिया के 70 मुल्कों के लोग भगवान बुद्ध के धर्म का अनुसरण कर रहे हैं, इसलिए कूटनीतिक कार्रवाई करके, अफगानिस्तान से सम्पर्क करके भगवान बुद्ध के ऐतिहासिक भिक्षापात्र को वैशाली में वापस लाने की व्यवस्था करें।

महोदया, मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं कि कड़ी डिप्लोमेसी की कार्रवाई की जाए, भगवान बुद्ध का भिक्षापात्र वापस लाया जाए जिससे देश और दुनिया में उन्होंने ने जो विश्व शांति और मध्यम मार्ग का संदेश दिया था, उसका सभी लोग अनुसरण करें जिससे विश्व में शान्ति स्थापित हो।